षिक्षक, षिक्षक–छात्र संबंध और उत्तरदायित्त्व

भाग्य नारायण ठाकुर
व्याख्याता, षिक्षा संकाय
एल. एन. कॉलेज, भगवानपुर
वैषाली

यद्यदाचरित्र श्रेष्टस्ततदेवेतरी जनः।
स यत्यप्रणाम कुरूते लोकस्तदनुवर्तत।। **(स्त्रोत भागवतगीता)**

समाज में षिक्षक का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। चूँकि षिक्षक समाज की संस्कृति, सभ्यता व मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांरित करता है इसलिए उन्हें समाज की धूरी भी कहते हैं। साथ ही षिक्षक को एक आदर्ष तथा प्रतिदर्ष माना जाता है। षिक्षक अपने ज्ञान एवं अनुभव से बालकों में मूल्य संस्कारित कर सकते हैं तथा बालकों के सामने एक सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं। एक अच्छे षिक्षक का सर्वोतम गुण यह है कि उसके पास संबंधित विषय वस्तु के क्षेत्र में अनेकों गुण विद्यमान हो।

किसी राष्ट्र की छवि भौतिक सम्पदा से नहीं अपितु उस राष्ट्र की मानव एवं बौद्धिक सम्पदा से बनती है और उसकी बौद्धिक सम्पदा को उत्तरोतर बढ़ाने का उत्तरदायित्व 'षिक्षा' पर निर्भर करता है। षिक्षा समाज में ज्ञान–कौषल, बोघ एवं षिष्टता के घरातल पर सृजनषील वातावरण का निर्माण करती है। षिक्षा मानव जीवन में स्वयं को समझने और मन को जीतने की एक कला है जिसके द्वारा मनुष्य आत्मविद होकर जीत सकता है। यह सर्वविदित है कि षिक्षा प्राप्त करते ही हमारा दूसरा जन्म होता है।

महात्मा गाँधी ने कहा था – "षिक्षक राष्ट्र निर्माता है"। षिक्षक की भूमिका अहम् होती है तथा जैसी षिक्षा बालकों को प्रदान की जाएगी बालक समाज के प्रति वैसा ही उत्तरदायित्व निभाने में समर्थ हो सकेगा। अतएव एक स्वस्थ समाज के निर्माण हेतू अध्यापक व षिक्षार्थियों दोनों का प्रषिक्षण आवष्यक है जिससे कि एक मूल्योंन्मुखी समाज की स्थापना की जा सके। अर्थात् धर्म का आचरण अपेक्षित है। अतः अध्यापक का महत्व निम्नलिखित श्लोक से परिलक्षित होता है :–

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानान्षालाकया ।
चक्षुरून्मीलिंय ये तस्मै जी गुरवे नमः ।। **(स्रोत भागवतगीता)**

डॉ ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में षिक्षा को नये शब्दों में परिभाषित करते हुए कहा है कि "षिक्षा" वास्तविक अर्थो में सत्य की खोज है। यह ज्ञान और प्रकाष की अन्तहीन यात्रा है, ऐसी यात्रा मानवतावाद के विकास के लिए नए रास्ते खोलती है। अतः हम कह सकते हैं कि यदि आज के युवा वर्ग भविष्य के राष्ट्र निर्माण–कर्त्ता हैं तो इस वर्ग के निर्माण में षिक्षक की अहम् भूमिका होती है। इस प्रकार षिक्षक राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

षिक्षा षब्द संस्कृत के 'षिक्ष' धातु से बना है जिसका अर्थ ज्ञान प्राप्त करना या अधिगम अर्थात् सीखना तथा अध्ययन करना आदि है। षिक्षा से मिलता–जुलता दूसरा षब्द संस्कृत में 'विद्या' है जो विद् धातु से बना है जिसका अर्थ है 'जानना' या 'ज्ञान प्राप्त करना'। ;अग्रवाल, 1994द्ध

इस प्रकार सार रूप में षिक्षा का अर्थ है भीतरी या अन्तर्निहित षक्तियों को बाहर की ओर विकसित करना अर्थात् जन्मजात् षक्तियों का सर्वांगीण विकास करना। अतः षिक्षा मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में जीवन–षैली के निर्माण, उसके कार्य– व्यवहारों में सुधार करने, उसे निर्लिप्त होकर जीवन–यापन करने तथा समाज के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठ होने में सहायक होती है। ;सिंह, 2007द्ध

षिक्षा बालक को उसके भावी जीवन की तैयारी व उसे सफलतापूर्वक निभाने की क्षमता प्रदान करता है। बालक के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन करने के लिए षिक्षा की अति आवष्यकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार सूर्य के प्रकाष को पाकर कमल का फूल खिल उठता है तथा सूर्य अस्त होने पर कुम्हला जाता है, ठीक उसी प्रकार षिक्षा के प्रकाष को पाकर प्रत्येक व्यक्ति कमल के फूल की भाँति खिल उठता है तथा अषिक्षित रहने पर दरिद्रता, षोक एंव कष्ट के अन्धकार में डूबा रहता है। ;जयसवाल, 1991द्ध

प्रभावकारी षिक्षण का प्रमुख कार्य अधिगम को प्रभावषाली बनाना है ताकि अधिगम प्रभावी एंव स्थायी हो। अतः षिक्षण और अधिगम परस्पर घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। एक षिक्षक ही षिक्षण और अधिगम को नियोजित, संगठित एंव नियंत्रित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य करता है और षिक्षक अपना कर्त्तव्य तभी अच्छी तरह निभा सकता है जब उसे प्रभावी षिक्षण के विषय में स्पष्ट ज्ञान हो। ;षर्मा एंव गुप्ता, 2007द्ध

वास्तव में षिक्षण षिक्षक और षिक्षार्थी के बीच वह संपर्क है जिसमें षिक्षकों के द्वारा षिक्षार्थी को आगे बढ़ाने का कार्य किया जाता है अर्थात् षिक्षण एक पक्षीय न होकर अध्यापक और छात्र के पारस्परिक सहयोग से चलने वाली रूचिकर और उपयोगी क्रिया हैंऔर उसका तीसरा तत्व है पाठ्य–क्रम। वास्तव में प्रभावी षिक्षण से संबंधित उपर्युक्त सभी परिभाषाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि षिक्षण एक व्यापक अवधारणा है जिसमें षिक्षार्थी के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए सभी आवष्यक क्रियाओं पर विचार किया जाता है। इसी कारण यह एक त्रिध्रुवीय

प्रक्रिया है जिसमें षिक्षक को षिक्षार्थी के साथ–साथ उन सभी षिक्षण स्रोतों को ध्यान में रखना होता है जो षिक्षण को प्रभावित करते हैं। ;षर्मा एंव गुप्ता, 2007द्ध

नव पीढ़ी के निर्माण के लिए आदर्ष षिक्षकों की भूमिका को ध्यान में रखते हुए ही इस देष में पुरातन काल से ही षिक्षक या गुरू को गरिमामय पद व स्थान प्राप्त है। षिक्षकों के जीवन व आदर्षों से समाज सदा से प्रेरणा व दिषा का ज्ञान लेता रहा है। षिक्षक को बालक भगवान तुल्य मानते रहे हैं। कहा जाता है –

गुरू ब्रह्मा गुरूविष्णु गुरू देवो महेष्वरः ।

गुरू साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

गुरू को त्रिमूर्ति – अर्थात **ब्रह्मा, विष्णु** और **महेष –** का दर्जा दिया गया है, ब्रहमा जो ज्ञान का भंडार हैं, विष्णु जो ज्ञान दाता हैं और षिव जो ज्ञान का सुदपयोगी कर्त्ता हैं।

विवेकानन्द का कहना है कि वही षिक्षक सच्चा है जो विद्यार्थियों के स्तर पर उतकर उनकी आत्मा का परीक्षण करके षिक्षा देता है और अच्छी षिक्षा वह है जो विद्यार्थियों को प्रेरणा देता है। कुछ षिक्षा शास्त्रीयों ने यहाँ तक कहा है कि षिक्षक वह धूरी है जिसके चारों ओर षिक्षण की प्रक्रिया घूमती रहती है। षिक्षक का वर्तमान षिक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान है। वह बालक की रूचियों, योग्यताओं तथा क्षमताओं के अनुकूल षिक्षा की व्यवस्था करता है। इसके साथ ही षिक्षक के व्यक्तित्व का अप्रत्यक्ष रूप से छात्रों पर प्रभाव पड़ता है। षिक्षक पाठयक्रम के माध्यम से षिक्षार्थी में परविर्तन लाने का प्रयास करता है तथा षिक्षार्थी के अन्तः क्रिया द्वारा हीं अधिगम उद्देष्यों की प्राप्ति होती है।

एक प्रभावकारी षिक्षक के लिए आवष्यक है कि सबसे पहले वह अपनी सोच, अपनी मनोवृति तथा मूल्यों पर नियंत्रण करने के साथ अपने षिक्षार्थियों, उनकी संस्कृति एवं उनकी मान्यताओं तथा विष्वासों के विषय में सम्पूर्ण जानकारी अर्जित करे जिससे उन्हें उनके व्यवहार को समझने में आसानी हो तथा अधिगम की सम्पूर्ण प्रक्रिया सहज हो जाए।

षिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रभावकारी षिक्षक निम्न महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता हैः

1. **सीखने में सुविधा लाना**
2. **छात्रों के चरित्र का विकास करना**
3. **कक्षा को सुचारू रूप से व्यवस्थित करना**
4. **छात्रों के कार्यों का मूल्यांकन करना**
5. **विद्यार्थियों के अन्दर उचित मूल्यों का विकास करना**
6. **छात्रों की समस्याओं का समाधान करना**
7. **छात्रों को आवष्यकतानुसार निर्देषन व परामर्ष देना**
8. **छात्रों को कुषल नागरिक बनाना**
9. **छात्रों में समाजिक कुषलता उत्पन्न करना**

प्रभावकारी षिक्षकों के गुणः एक प्रभावकारी षिक्षक के अन्दर जो अपेक्षित गुण होने चाहिए उन्हें हम निम्न भागों में विभक्त कर सकते हैं ।

1. **व्यक्तित्व गुणः**

डब्ल्यू. एच. रायर्बन के अनुसार षिक्षण प्रक्रिया की सफलता अध्यापक उसके ज्ञान और उसकी कुषलता और विषेषकर उसके व्यक्तित्व एवं उसके चारित्रिक गुणों पर आधारित है।

(क) **आकर्षक व्यक्तित्व** . अध्यापक के व्यक्तित्व के आकर्षक होने का तात्पर्य यह कदापि नहीं है, व्यक्ति से तात्पर्य है कि अध्यापक की वेषभूषा उचित होनीं चाहिए। व उसके सजने सवंरने का ढ़ग अध्यापक की गरिमा के अनुरूप होना चाहिए। उसे चमकीले व भड़कीले कपड़े नहीं पहनने चाहिये और न हीं उसे अपनी ओर से इतना लापरवाह हो जाना चाहिए कि वह गन्दा प्रतीत हो उसे साफ सुथरे कपड़े पहनने चाहिये।

(ख) **उत्तम स्वास्थ्य** . जब हम जानते है कि स्वस्थ्य शरीर में हीं स्वस्थ्य मस्तिष्क का वास होता है। इस कारण अध्यापक को भी अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहते हुए उस पर यथासम्भव ध्यान देना चाहिए। यदि वह शारीरिक दृष्टि से अस्वस्थ होगा तो उसमें चिड़चिड़ाहट व रूखापन आ जायेगा व पढ़ाने पर अपने ध्यान को केंद्रित नहीं कर पायेगा।

(ग) **प्रेरणास्पद व्यक्तित्व** . जहॉ अध्यापक के आर्कषक व्यक्तित्व व स्वस्थ्य शरीर उसके लिये आवष्यक गुण है, वहीं विद्यार्थियों की दृष्टि से यह भी आवष्यक गुण है कि अध्यापक एक चेतन्य प्राणी के रूप में बच्चों के समक्ष उपस्थित होताकि वह बालकों को प्रेरित कर सकने में समर्थ हो सके। उसे बालकों के समक्ष क्रियाषील इस कारण भी रहना चाहिए जिससे बच्चों पर उसका प्रभाव सकारात्मक पड़े। इस संबंध में ऑर्थर ने ठीक ही कहा है कि सफल षिक्षण के लिये अध्यापक में जीवंत शक्ति का होना आवष्यक है, यह केवल इसलिए ही आवष्यक नहीं है कि इसका प्रभाव बालकों पर प्रतिबिम्बात्मक रूप में पड़ेगा परन्तु थकान से उत्पन्न हुई बाधाओं को कम करने के लिये भी यह आवश्यक है।

(घ) **अध्यापक को चरित्रवान होना** . अध्यापक का चरित्र ऐसा होना चाहिये जिसे छात्र आदर्ष के रूप में देखें और उसका अनुपालन कर छात्र सही दिषा की ओर उन्मुख हो सकें। वास्तव में एक अच्छे अध्यापक के लिये चरित्रवान, धैर्यवान, दृढ़ संकल्पी, उदार,

ईमानदार निष्पक्ष, सत्यवादी, आषावादी, न्यायप्रिय, सहयोगी, सहानुभूतिपूर्ण व आत्म विष्वासी होना आवष्यक है। अध्यापक को अपनी कथनी व करनी के बीच सामंजस्य स्थापित करना चाहिए।

(ङ) **नेतृत्व की क्षमता होना** . अध्यापक कक्षा में सर्वोपरि स्थान रखता है। अध्यापक में यह क्षमता हो कि वह अपने छात्रों का मार्गदर्षन करके उन्हें सही मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित कर सकें। एक अध्यापक को नेतृत्व के गुणों से परिपूर्ण होना चाहिये। नेतृत्व की क्षमता का आयाम है कि अध्यापक में यह क्षमता हो कि वह अपने छात्रों का मार्गदर्षन करके उन्हें सही मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित कर सकें। अध्यापक कक्षा में सर्वोपरि स्थान रखता है उसका व्यवहार इतना प्रेरणाप्रद होना चाहिये कि बच्चे उसका अनुकरण कर सकें। कक्षा की पाठयक्रम संबंधि क्रियाओं व विद्यालय की पाठ्य सहगामी क्रियाओं की संचालन में उसे अगुआ की भूमिका अदा करनी चाहियें।

(च) **उचित स्वर व उच्चारण होना** . किसी भी व्यक्ति से जब हम बात करते हैं तो उनकी वाणी व उच्चारण का हमारे ऊपर प्रभाव पड़ता है। प्रभावषाली व्यक्तित्व हेतु अध्यापक का स्वर संयमित होना चाहिए जिसमें आत्म–विष्वास की झलक मिले और उसका उच्चारण शुद्ध होना चाहिए। अध्यापक के स्वर में आत्मविष्वास व प्रभुता बनाने हेतु यह भी आवष्यक है कि स्वर में प्रवाह हो और उसके गति नियंत्रित हो।

(छ) **संवेगात्मक स्थिरता** . अध्यापक को न तो संवेगों का प्रदर्षन बहुत उद्वेलित होकर करना चाहियें और न हीं उनके प्रदर्षन के प्रति निष्क्रिय होना चाहिये। उसमें संवेगात्मक स्थिरता हो जिससे बच्चे उसे समझ सकें।

(ज) **सन्तुलित व्यक्तित्व** . अध्यापक की आकृति वेषभूषा चालढाल, बातचीत करने का तरीका, उसका ज्ञान, स्वर आदि इस स्तर की होनी चाहिए जो उसे एक अच्छे अध्यापका के रूप में स्थापित करें।

2. सामाजिक गुणः

(क) **सामाजिक कुषलता होना** . इनके लिए यह आवष्यक है कि वह सामाजिक दृष्टि से कुषल हो अर्थात उसके अन्दर इतनी व्यवहार कुषलता होनी चाहियें कि वह समाज में अराजक स्थितियों को उत्पन्न न होने दे। अपने हर प्रयास के द्वारा उसका ध्यान इस ओर केंद्रित होना चाहिये कि वह समाज के विकास में प्रत्यक्ष रूप में कोई देन दे सकें।

(ख) **समाज के साथ समायोजन व अनुकूलन स्थापित करना** . एक अच्छे अध्यापक के लिये यह भी आवष्यक है कि वह समाज को अच्छी तरह से समझे व समाज के साथ समायोजित होने का प्रयास करे। यदि वह समाज को मान्यता नहीं देगा तो इसका प्रभाव छात्रों पर भी पड़ेगा और वह भी उस की चिन्ता नहीं करेगें।

(ग) **सम्प्रेषण की क्षमता होना** . एक प्रभावषाली अध्यापक के अन्दर अच्छी सम्प्रेषण क्षमता का होना आवष्यक है। इसका आषय है कि अध्यापक अपने विचारों को अन्य लोगों के समक्ष इस प्रकार प्रस्तुत करें कि उसका प्रभाव लोगों पर पड़े व वे उसकी बात को मानें। नेतृत्व की क्षमता के अन्तर्गत सम्प्रेषण का महत्वपूर्ण योगदान है। छात्र उसकी बात को सुनकर उसे हृदय में धारण करें व उसका अनुपालन करें इसके लिये यह आवष्यक हैं कि अध्यापक को सम्प्रेषण कला में चतुर होना चाहियें।

(घ) **सामाजिक मूल्यों मे आस्था** . अच्छे अध्यापकों का एक गुण यह भी हैं कि वह समाजिक मूल्यों में विष्वास व आस्था रखते हुए उन्हीं के अनुरूप अपने आचरण को ढालने का प्रयास करें और अपने छात्रों को भी ऐसा ही करने के लिए प्रेरित करे। उसके लिय यह भी आवष्यक है कि वह समाज की संस्कृति को भी समझे व उसे जीवन्त रखने में अपना सक्रिय योगदान दें।

(ङ) **विद्यार्थियों के साथ संबंध** . अध्यापक के संबंध में कहा जाता है कि वह छात्रों का मित्र व निर्देषक होता है। इस कथन से यह अपेक्षा हैं कि अध्यापक का अपने छात्रों के साथ बहुत ही सन्तुलित व निष्पक्ष व्यवहार होना चाहियें। उसके व्यवहार में अधिकारी या अधिनायकीय व्यवहार की झलक नहीं होनी चाहिये। उसका व्यवहार ऐसा होना चाहियें जिससें विधार्थी उस पर विष्वास करें व उसका कहा माने।

(च) **सहकर्मियों के साथ संबंध** . अध्यापक को अपने साथी अध्यापकों तथा कर्मचारियों के साथ परिवार के सदस्यों के समकक्ष संबंध रखने चाहियें। छोटों के साथ छोटों जैसे संबंध तथा बड़ो के साथ बड़ो जैसे संबंध रखने चाहिये। उसे न तो किसी की निन्दा करनी चाहियें और न ही किसी द्वारा की गई निन्दा को सुनना चाहिये। उसका पूरा प्रयास विद्यालय के वातावरण में अच्छे संबंध स्थापित हो इसके लिए होना चाहिये।

(छ) **प्राचार्य के साथ संबंध** . प्राचार्य विद्यालय के सर्वोच्च पद पर आसीन होता है। इस कारण उसे विद्यालय परिवार का मुखिया कहा जाता है। प्रत्येक अध्यापक से यह आषा की जाती है कि वह परिवार के इस मुखिया का यथोचित आदर करे और उसके खिलाफ किसी भी प्रकार की गुटबन्दी ना करें। अध्यापक का यह व्यवहार उसके छात्रों के लिए आदर्ष स्थापित करता है।

(ज) **अभिभावकों के साथ संबंध** . बच्चों के माता–पिता या संरक्षक के साथ अध्यापकों का निष्पक्ष व सम्मानजनक व्यवहार होना चाहिये, साथ ही साथ यदि अध्यापक उनसे किसी समस्या का समाधान चाहते हैं जो उनके बच्चें से संबंध रखती है तो उसका भी हल करने का प्रयास, अभिवावकों व षिक्षकों द्वारा किया जाना चाहियें। बालक का विकास उचित दिषा में हो इसी कारण आज अभिभावक–अध्यापक संघ स्थापित किये जाते है।

(झ) **समाज के साथ संबंध** . विद्यालय को जॉन डयूवी ने समाज का एक लघु रूप कहा है ;शैबीववस पद उपदपंजनतम`वबपमजलश्द्ध। अर्थात किसी भी समाज की झलक उसके विद्यालयों में देखने को मिल सकती है। विद्यालय के सुचारू रूप से कार्य करने के लिए आवष्यक है कि विद्यालय व समाज के परस्पर मधुर संबंध हो।

3. व्यावसायिक गुणः

(क) **विद्यार्थियों में रूचि लेना .** एक अच्छे अध्यापक के लिये यह आवष्यक है कि वह जिन छात्रों को पढ़ा रहा हैं उनमें पूर्ण रूचि लें। एक कथन हैं ''यदि अध्यापक के जॉन को लेटिन पढ़ानी है तो उसे लेटिन और जॉन दोनों को ही जानना चाहिये। उसे विद्यालयों में उसी प्रकार से रूचि लेनी चाहिये जैसे कि एक पिता अपने पुत्र की गतिविधियों में रूचि लेता है। उसे अपने छात्रों का शुभचिन्तक होना चाहिये व उनके कल्याण व सहायता के लिए सदैव ही तैयार रहना चाहियें।

(ख) **षिक्षण व्यवसाय में रूचि व आस्था .** षिक्षक के लिये यह आवष्यक है कि वह षिक्षण व्यवसाय में रूचि ले। उसे कभी भी इस बात की ग्लानी नहीं होनी चाहिये कि वह इस व्यवसाय में क्यों आया। न ही उसे कभी भी यह सोचना चाहिये यह बहुत ही छोटा व्यवसाय है। यदि वह ऐसा सोचेगा तो उसके अन्दर हमेषा उदासीनता व शर्म का भाव रहेगा और अन्दर हीं अन्दर वह इस व्यवसाय से नफरत करेगा। यदि वह अपने व्यवसाय में रूचि लेता है व उसके प्रति उसके मन में निष्ठा व आस्था है तो वह पूरे मनोयोग से अपने कार्य में रूचि लेगा।

(ग) **व्यावसायिक प्रषिक्षण** . एक कुषल अध्यापक के लिए यह जरूरी है कि वह षिक्षण के विभिन्न प्रयोगों, आयामों व तकनीकियों से परिचित हो और इसके लिए उसे व्यवसायिक दृष्टि से प्रषिक्षित होना चाहिये। व्यावसायिक प्रषिक्षण प्राप्त षिक्षकों को यह पता होता है कि उन्हें क्या पढ़ाना है वरन् वह यह बता पाने में भी समर्थ होता है कि उन्हें कैसे पढ़ाना है जिससे छात्र अधिक से अधिक ज्ञान रोचक ढंग से ग्रहण कर सके। वह इस प्रषिक्षण के द्वारा छात्रों के समक्ष ज्ञान को सार्थक व उपयोगी ढंग से प्रस्तुत करता है। एक बार प्रषिक्षण लेने के बाद षिक्षक को समय–समय पर षिक्षा–प्रषिक्षण के कार्यक्रमों में भाग लेकर अपनी गुणवत्ता बनाए रखनी चाहिये।

(घ) **मनोविज्ञान का ज्ञाता** . अच्छे अध्यापक के लिए यह भी जरूरी है कि उसे बाल मनोविज्ञान तथा षिक्षा मनोविज्ञान का पर्याप्त ज्ञान हो। बाल मनोविज्ञान का ज्ञान अध्यापक को छात्रों की रूचियों, क्षमताओं व योग्ताओं का ज्ञान करा सकने में सहयोगी होगा व षिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा अध्यापक विभिन्न स्तरों के अनुकूल अपने षैक्षिक कार्यक्रम को दिषा निर्देषन दे सकेगा, साथ ही वह व्यक्तिगत भिन्नताओ के अनुरूप अपनी षैक्षिक गतिविधियों को संचालित कर सकेगा।

(ङ) **विषय–वस्तु पर अधिकार होना** . एक अच्छे व कुषल अध्यापक के लिए यह जरूरी है कि जो भी विषय वह पढ़ा रहा हो, उस पर उसका पूर्ण अधिकार होना चाहिये और साथ ही उस क्षेत्र में होने वाले नवीन अविष्कारों से भी परिचित होना चाहिये। विषय के ज्ञान के अभाव में अध्यापक छात्रों के समक्ष पूर्ण आत्मविष्वास का प्रदर्षन नहीं कर पायेगा और विषय ज्ञान की कमजोरी उसे छात्रों की दृष्टि में नीचे गिरा सकती है। इस सम्बन्ध में के. जी. सैयदैन का कथन ठीक है, आप एक बर्तन में से कोई वस्तु तब तक उडेलकर नहीं निकाल सकते जब आपने वह वस्तु उसमें रख दी हो। यदि षिक्षक ज्ञान व बुद्धि की दृष्टि से हीन व खोखला है, यदि उसमें ज्योति प्रदान करने वाली षक्ति नहीं है तो वह अपने बालकों के मस्तिष्क को प्रखर या उनकी भावनाओं को मानवीय रूप प्रदान नहीं कर सकता। यदि वह स्वयं प्रदीप्त दीप नही है तो वह दूसरे मे ज्ञान के प्रकाष को प्रसारित करने में सदैव असमर्थ रहेगा।

(च) **उचित अध्ययन की आदत होना .** अध्यापक के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि एक सच्चा अध्यापक जीवन पर्यन्त विद्यार्थी ही रहता है। इसका तात्पर्य यही है कि अध्यापक को सदैव ही पढते रहना चाहिये जिससे वह अपने ज्ञान का आवष्यकतानुसार नवीनीकरण कर सके। खाली रहकर समय व्यर्थ में इधर–उधर की बातों में व्यतीत करने से अच्छा है वह स्वयं को अध्ययनरत रखे।

(छ) **पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में रूचि** . आज की षिक्षा सिर्फ कक्षा की चारदिवारी तक ही सीमित नही है वरन् उसमें पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का भी महत्वपूर्ण स्थान है और आज की षैक्षिक विचारधारा इस बात पर बल दे रही है कि वर्तमान में षिक्षा सिर्फ ज्ञानार्जन का ही एक साधन नही है वरन् वह बालक के व्यक्तित्व का चतुर्मुखी विकास भी करती है। पाठ्क्रम सहगामी क्रियायें बालक को चतुर्मुखी विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है। पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के अन्तगर्त खेलकूद, स्काउटिंग एन० एस० एस०, एन० सी० सी०, भ्रमण, वाद–विवाद, छात्रसंघ, साक्षरता, रेडक्रास, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि सम्मिलित होते है। अध्यापक को इन क्रियाओं की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये, साथ ही उसे इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि वह इन क्रियाओं पर इतना अधिक घ्यान न देने लगे कि अपने मुख्य लक्ष्य–षिक्षण को भूल जाये।

(ज) **प्रयोग व अनुसंधान में रूचि .** वर्तमान युग में षिक्षा के क्षेत्र में षोध एवं अनुसन्धान का महत्वपूर्ण स्थान है। अध्यापक को यदि षिक्षण मे सुधार लाना है तो उसे नित्यप्रति नये अनुसन्धान व प्रयोग करने चाहिये। साथ ही उसके षिक्षण के दौरान लक्ष्य में जो भी समस्यायें उत्पन्न हों, उसके प्रयोगों के आधार पर वैज्ञानिक ढ़ंग से समाधान करने का प्रयास करना चाहिये।

(झ) **षिक्षण विधियों पर अधिकार .** षिक्षा के क्षेत्र में तकनीकियों के सम्बन्ध में कहा जाता है कि यह व्यावसायिक कुषलता का निर्धारण करती है और जो भी अध्यापक इन तकनीकियों को जानता है व उनका उचित स्थान पर प्रयोग करता है वह निःसंदेह रूप में एक कुषल अध्यापक होता है। अध्यापक को प्रायः जिन तकनीकियोंपर पूर्ण अधिकार होना चाहिये, वह है – प्रष्न रीति, व्याख्यान रीति, उदाहरण रीति व विवरण रीति। इन विधियों के प्रयोग से वह पाठ को रोचक तो बना ही सकता है, साथ ही साथ वह पाठ के विकास में छात्रों का पूर्ण सहयोग लेता है।

(ञ) **षिक्षण सूत्रों के अनुकूल पाठ को प्रस्तुत करना .** बालकों के समक्ष यदि हम किसी भी पाठ को प्रस्तुत करते हैं और यह चाहते है कि वह उस पाठ को आसानीपूर्वक ग्रहण कर लें तो हमारे लिए यह आवष्यक है कि हम षिक्षण सूत्रों को ध्यान में रखकर पढ़ाएं। अध्यापक को इन सूत्रों का ज्ञान होना चाहिये व साथ ही इनका प्रयोग करना भी आना चाहिये, यथा– सरल से कठिन की ओर, ज्ञात से अज्ञात की ओर, विष्लेषण से संष्लेषण की ओर आदि।

(ट) **षिक्षण सामग्री का यथोचित प्रयोग .** एक अच्छे अध्यापक के लिये यह भी जरूरी है कि विषय से सम्बन्धित षिक्षण सामग्री का प्रयोग यथास्थान करे। परन्तु इसका प्रयोग करते समय उसे बात का ध्यान रखना चाहिये कि यह सामग्री सिर्फ साज–सज्जा हेतू नहीं है वरन् यह पाठ के समुचित विकास हेतु है।

(ठ) **पढ़ाने से पूर्व पाठ की तैयारी करना .** कक्षा में जाने से पूर्व अध्यापक को अपने पाठ की पूर्ण तैयारी कर लेनी चाहिये व अपने पाठ को योजनाबद्ध तरीके से छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिये। अध्यापक कितना ही ज्ञानवान क्यों न हो, यदि वह पूर्ण तैयारी के साथ कक्षा में नहीं जाता तो इसकी सम्भावना बढ़ जाती है कि वह कुछ व्यर्थ की बातें पढ़ा दे व कुछ काम की बातों को न पढ़ाये। इस कारण यह आवष्यक है कि जो भी कुछ वह पढ़ाये, उसे नियोजित ढ़ग से पढ़ाये।

प्रभाव कारी षिक्षक की विषेषताएँः

1. **नैतिक गुणः** प्रभावकारी षिक्षक में निम्नलिखित नैतिक गुण होनी चाहिए .

(क) न्याय और निष्पक्षता – अच्छे षिक्षक में न्याय और निष्पक्षता के गुण होने चाहिये। अच्छा षिक्षक विभिन्न वर्गो और जातियों के छात्रों पर उसका प्रभाव समाप्त हो जाता हैं और वह उसके विष्वास तथा सम्मान का पात्र नही रह जाता है। इस संदर्भ में रायबर्न का मत है न्यायपूर्ण होने का प्रयास करने की आदत षिक्षक को अनुषासन और कार्य करने में सहायता देती हैं।

(ख) आत्म विष्वास व इच्छा शक्ति, अच्छे षिक्षक में आत्मविष्वास और इच्छा शक्ति के गुण होना आवष्यक है जब भी षिक्षक किसी वर्ग के छात्रों के सामने खड़ा होता है और उनकी ऑखो को अपने ऊपर लगा हुआ देखता है इसके अभाव में वह अपना मानसिक संतुलन खो देता हैं और छात्रों के उपहास का पात्र बन जाता है।

(ग) अच्छा स्वभाव व प्रसन्नता प्रभावकारी षिक्षक को मधुर ओर प्रसन्नमुख होना चाहिए। षिक्षक का मघुर व प्रसन्न मुख स्वभाव छात्रों के मस्तिष्क पर इस बात को अंकित कर देता हैं कि कार्य का नीरस और अरूचिकर होना आवष्यक नहीं है क्रुद्ध चेहरे मलिन मुख और तनी हुई भौहों वाले षिक्षक का न तो कक्षा में स्वागत होता है और न वह छात्रों के मस्तिष्क को ज्ञान से आलोकित करने में सफल होता है।

(घ) दया व सहानुभूति प्रभावकारी षिक्षक अपने छात्रों के प्रति दया और सहानभूति का व्यवहार करता है षिक्षक में यह योग्यता जितनी ही अधिक होगी उसका षिक्षण उतना ही अधिक सफल होगा दया और सहानुभूति के गुणों के अभाव में छात्रों को सीखने के लिये केवल बाध्य किया जा सकता है, उनमें सीखने के प्रति रूचि पैदा नहीं की जा सकती।

(ड़) धैर्य व लगन, एक प्रभावकारी षिक्षक अपने धैर्य व लगन से सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है कक्षा में सभी छात्र बुद्धिमान और आज्ञाकारी नहीं होते है कुछ मंद बुद्धि और शरारती भी होते है। ऐसे छात्रों को षिक्षक केवल धैर्य और निरंतर चेष्टा से ही ज्ञान और सदव्यवहार को छात्रों में प्रविष्ट करा सकता है। (भट्टाचार्य 2008)

2. **मानसिक गुणः** एक प्रभावकारी षिक्षक में निम्नलिखित मानसिक गुणों का समावेष होना चाहिए।

(क) विषय का ज्ञाताः प्रभावकारी षिक्षक को अपने विषय का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए तभी वह कुषलता से बच्चों को पढ़ा सकता है। ज्ञान विहीन षिक्षक न तो छात्रों का सम्मान प्राप्त करता है और न उसके मस्तिष्क का विकास करता है।

(ख) षिक्षण सिद्धातों व विधियों का ज्ञान एक प्रभावकारी षिक्षक में षिक्षण सिद्धातों और विधियों की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए। इस संदर्भ में रायबर्न ने अपना विचार प्रकट करते हुए कहा है अच्छा षिक्षक षिक्षण विधियों के संबंध में अपने ज्ञान की वृद्धि करने के लिये सदैव सचेष्ट रहता है यह अपने ज्ञान को नया और आधुनिक रखने की चेष्टा करता है।

(ग) मनोविज्ञान का ज्ञान प्रभावकारी षिक्षक की मनोविज्ञान की सब शाखाओं को तो नहीं पर उन शाखाओं का ज्ञान निष्चित रूप से होना चाहिए, जिनका षिक्षण से घनिष्ट संबंध है उदाहरण के लिए षिक्षा मनोविज्ञान बाल–मनोविज्ञान व्यावहारिक मनोविज्ञान, प्रयोगणात्मक मनोविज्ञान इत्यादि।

(घ) बाल प्रकृति का ज्ञान–आधुनिक युग में षिक्षा प्रक्रिया बाल–केंद्रित है। अतएव षिक्षक के लिए विषयों का ज्ञान परम आवष्यक है कहने का तात्पर्य यह है कि उसे बालकों की रूचियों इच्छाओं मूल्यप्रवृतियों, अभि–वृतियों और आवष्यकताओं से अवगत होना चाहिए तभी वह बालकों की शारीरिक ओर मानसिक विषेषताओं को समझ कर उनका उचित पथ प्रदर्षक बन सकता है।

(ड़) संस्कृति व सभ्यता का ज्ञान बालक को उसके संस्कृति एंव सभ्यता का ज्ञान प्रदान करता और उनमें आवष्यक परिवर्तन करके एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी को हस्तांतरित करना षिक्षक अपने समाज की संस्कृति और सभ्यता का इतना कमी जान रखता है कि वह उसके प्रतिमानों से अपने छात्रों को पूर्णतय परचित करा देता है।

(च) वातावरण का ज्ञान, इस संदर्भ में शर्मसल का कहना है कि वातावरण के अनुकूलन बनाना है अतः प्रभावकारी षिक्षक छात्रों को अपने वातावरण से अनुकूलन करने में सहायता देने के लिए जानकारी रखता है।

(छ) व्यक्ति और समाज की आवष्यकताओं की पूर्ति ।

3. वैयक्तिक गुणः एक प्रभाकारी षिक्षक में निम्नांकित व्यक्तिक गुणों का समावेष होना चाहिए –

(क) उत्साह व आषावादि (ख) पहलकदमी व साधन सम्पन्नता (ग) अच्छी आदतें (घ) नेतृत्व

(ड़) विनोद प्रियता (च) कक्षा व्यवहार (छ) कक्षा नियंत्रण

4. शारीरिक गुणः

(क) उत्साह व स्वास्थ्य (ख) स्फूर्ति व उत्साह (ग) वेष–भूषा (घ) स्वर (ड़) भाषा (च) व्यक्तित्व

प्रभावकारी षिक्षक का व्यकितत्व प्रभावोत्पादक होता है अच्छे व्यक्तित्व वाला षिक्षक स्वस्थ निरोग, विद्वान, चरित्रवान और कार्यकुषल तथा अच्छी आदतों, रूचिओं, और व्यवहार वाला होता है इन गुणों के अभाव में षिक्षक का व्यक्तित्व प्रभावहीन हो जाता है। परिणाम स्वरूप वह छात्रों को कुछ भी नहीं सिखा पाता है (शास्त्री 2006)।

प्रभावकारी षिक्षक की क्षमताएँः

1. विषय वस्तु तथा सीखने के मनोविज्ञान का व्यावहारिक ज्ञान एक अच्छे षिक्षक में होना चाहिए ज्ञान के क्षेत्र में बराबर विकास होता है समाज की आवष्यकताओं के अनुसार शोध द्वारा भी ज्ञान बढ़ाता रहता हैं, विभिन्न विषयों के ज्ञान में कुछ संदर्भ का भी ज्ञान होता है।

   भारतीय मूल्यों की जानकारी भी एक षिक्षक में होना चाहिए । समाजिक स्थिति और समाजिक परिवर्तन की आवष्यकताओं का भी ज्ञान होता है, इस ज्ञान में षिक्षक को परिचित होना चाहिए षिक्षक छात्रों को षिक्षा देने का कार्य करता है अतः उसे सीखने के मनोविज्ञान का व्यावहारिक ज्ञान होना चाहिए।

2. षिक्षक में कुषल सम्प्रेषण, उद्यमगत दक्षता तथा षिक्षण–प्रबंधन संबंधी योग्यता होनी चाहिए। कुषल सम्प्रेषण कौषल में षिक्षक को प्रवीण होना चाहिए ऐसा होने से षिक्षार्थी तक ज्ञान आसानी से पहुॅच जाता है। षिक्षक को चाहिए कि पढ़ाने की भाषा–षुद्धता संक्षिप्तता तार्किकता क्रम में विषय के प्रस्तुतीकरण की ओर ध्यान दे। षिक्षक को उदाहरण के द्वारा समझाने की क्षमता होनी चाहिए। षिक्षकों में अपनी जिम्मदारियों को समझने की क्षमता, कर्तव्य निष्ठ, षिक्षण पेषे का सम्मान करना, प्रतिष्ठात्मक गर्व, प्रजातांत्रिक जीवन–मूल्यों के प्रति श्रद्धा स्वास्थ्य तथा संवेगात्मक, भावात्मक स्थिरता आदि गुणों का होना आवष्यक है। उसे हर समय प्रसन्न रहना चाहिए बच्चों के प्रति सहानुभूति होनी चाहिए प्रेम, स्नेह, सद्भावना, सहयोगिता प्रेरणात्मक प्रवृतियों तथा आकर्षक व्यक्तित्व षिक्षक की विषेषताओं को बढ़ा देते है, इन गुणों से सम्पन्न षिक्षक पूरे समाज में आदर पाता है।

3. मार्ग दर्षन, परामर्ष प्रदान करने की कुषलता, नेतृत्व कार्य करने की अच्छी आदत, उदत संस्कृति ,सांसारिक पृष्ठभूमि ,मानव संबंध तथा निष्पक्षता का होना एक षिक्षक में आवष्यक है। वह केवल छात्रों का मार्ग दर्षक नहीं बल्कि पूरे समाज का मार्ग दर्षक होता हैं। अपने कर्तव्य का पालन, समाज की समस्याओं का निराकरणकर्त्ता का दायित्व भी एक षिक्षक को निभाना पड़ता है।

   सांस्कृतिक विचारधारा विष्वास, उत्तम संस्कार, व्यवहारकि आदर्ष आदि षिक्षक में निहित होकर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अधिगम कर्त्ता के व्यवहारों केा प्रभावित करता है। आपसी द्वेष, हिंसा, घृणा, और प्रभावहीन बनाने के लिए इसे षिक्षा का उद्वेष्य बनाना चाहिए।

   षिक्षक में मूल्यांकनकर्त्ता का गुण भी अपेक्षित है। इसके लिए उसमें निष्पक्षता, वैचारिक क्षमता दृढ़ता आवष्यक हैं तभी वह सच्चा निर्णय कर सकता है। अन्य क्षमताएॅ जो षिक्षक आवष्यक है उक्त क्षमताओं के अतिरिक्त निम्नांकित बातों की कुषलता एक प्रभावकारी षिक्षक में होनी चाहिए जो निम्नांकित है।

   (क) आधुनिक सूचना प्रौधोगिकी का ज्ञान (ख) संगणक सहायक षिक्षण संबंधी योग्यता का अनुभव

   (ग) सम्प्रेषण प्रक्रिया का ज्ञान (घ) षिक्षण कौषलों की निपुणता

   (ङ) अधिगम प्रक्रिया के संबंध में ज्ञान (भट्टाचार्य 2008)

प्रभावकारी षिक्षक का व्यवहारः

षिक्षण अधिगम की परिस्थिति एक अंतक्रियात्मक परिवेष को प्रस्तुत करती है, जिसमें षिक्षक अधिगम कर्ता और अध्ययन – विषयवस्तु के मध्य पारस्परिक अंतःक्रिया चलने के कारण अधिगम प्रति की प्राप्ति हो पाती है। इस परिस्थिति में एक षिक्षक के द्वारा जो कुछ भी कार्य या क्रियाकलाप करने के लिए प्रयास किया जाता है, वह सभी षिक्षक व्यवहार के अंतर्गत सम्मिलित किया जाना युक्ति युक्त प्रतीत होता हैं। अतः यह कहना संभव है कि षिक्षक द्वारा प्रदर्षित व्यवहार जो कि कक्षा–कला अध्ययन–अध्यापन परिस्थिति में दृष्टिगोचर हो षिक्षक व्यवहार कहलाता है।

प्रायः पाठ्य पुस्तकों में षिक्षक व्यवहार के साथ ही षिक्षण व्यवहार जैसे शब्द को भी प्रयुक्त किया गया होता हैं फलतः दोनो के अर्थबोध में कठिनाई होती है अतः यह स्पष्ट कर देना आवष्यक हैं कि षिक्षण कालीन–व्यवहार होता है। साथ ही साथ अधिगम कर्त्ता या छात्र भी कुछ न कुछ अधिगमजन्य व्यवहारों को प्रदर्षित करने के लिए प्रयास अवष्य करतें है यदि कक्षा –कक्ष मे अंतःक्रियात्मक वातावरण का सृजन किया जाता है।

यह कहना उचित है क्योंकि उद्वेष्यों के निर्धारण के साथ ही षिक्षक को अपने निर्धारण के साथ ही षिक्षक को अपने व्यवहारों का प्रदर्षन करना चाहिए ताकि निर्दिष्ट उद्वेष्यों की समाप्ति संभव हो सकें। कोई भी षिक्षक व्यवहार अनिष्चित या अपूर्व परिकल्पित रूप में कभी हो हीं नहीं सकता है। इसी प्रकार षिक्षक व्यवहार की प्रकृति सुव्यवस्थित होती है। अव्यवस्थित और अक्रमबद्ध षिक्षक–व्यवहार अनुदेषात्मक, उदेष्यों की प्राप्ति की संभावना को कम ही नहीं करता है बल्कि उसे असंभव सा बना देता है।

षिक्षक व्यवहार की प्रकृति समस्या समाधानमूलक भी होती हैं क्योंकि अनेकानेक अधिगम समस्या या कठिनाइयों का निराकरण षिक्षक व्यवहार के माध्यम से कक्षा–कक्ष स्थिति मे संभव हो पाता है। तभी अधिगम प्रतिकाल की प्राप्ति की संभावना अधिकाधिक संख्यक अधिगमकर्ताओं के संदर्भ मे संभव हो पाती है।

षिक्षक व्यवहार अवष्य हीं विष्लेषणात्मक होता है। व्याख्या करते या कार्य–कारण संबंधों को स्पष्ट करते समय अवष्य ही षिक्षक के द्वारा विष्लेषणात्मक व्यवहारों का प्रदर्षन किया जाता हैं। पाठ्यवस्तु को भी विष्लेषित करते हुए उन्हें अधिगम योग्य षिक्षण बिन्दुओं में परिवर्तित करना होता है। अधिगम कर्ताओं की व्यक्तित्व भिन्नता, योग्यता प्रारंभिक एवं व्यवहार आदि का भी विष्लेषण करने के बाद ही षिक्षक के द्वारा षिक्षण हेतु योजना का निर्माण कर पाना संभव हो पाता है। सुनियोजित प्रक्रिया होने के कारण ही षिक्षण के अंतर्गत मात्र चयनित व्यवहारों का प्रदर्षन एक षिक्षक कर पाता है। जबकि कोई नेता अपने भाषण में या पण्डित अपेन प्रवचन में ऐसा अवष्य करें यह अनिवार्य नहीं होता हैं।

षिक्षक व्यवहार आकलनात्मक होता है। क्योंकि बिना परीक्षण एवं मूल्यांकन संबंधी युक्ति एवं विधियों का प्रयोग षिक्षक के द्वारा अधिगम हेतु निर्दिष्ट सम्प्राप्तियों की सीमा के बारे में जानकारी प्राप्त कर पाना संभव नहीं हो पाता है। षिक्षक व्यवहार अभिनव एवं नवचारिक भी होने के कारण प्रतिदिन का षिक्षण कभी भी सरलता मूलक प्रतीत नहीं हो पाता है जबकि एक पुस्तक को कई बार पढ़ने के बाद पुनः नहीं होती है। यह नवीनता ही षिक्षक व्यवहार को आकर्षक और ग्रहण योग्य बनाती है।

हम षिक्षक व्यवहार को विकासात्मक एंव निर्माणात्मक भी कह सकते है। क्योंकि इन व्यवहारों के माध्यम से अध्ययन–अध्यापन इन परिस्थति में अधिगम कर्ताओं को ज्ञानात्मक, भावात्मक क्रियात्मक, मौलिक और नैतिक एवं चारित्रिक विकास हो पाता है। अधिगम अनुभवों के निर्माण के लिए भी षिक्षक व्यवहार की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि षिक्षक व्यवहार की प्रकृति बहुविधि एवं बहुआयामी होने का कारण ही अधिक मूल्यवान और व्यवहारिक होते हुए भी अधिगमकर्ता के लिए ग्रहण योग्य बनाती हैं।

विद्यालय प्रबन्ध में अध्यापक का महत्वः

विद्यालय को समुचित रूप से चलाने के लियें अध्यापकों के महत्व को जानना आवष्यक है। जिस प्रकार सेना में सेनापति और सैनिकों के पारस्परिक सहयोग से काम चलता है, उसी प्रकार विद्यालय में प्रधानाध्यापक ओर अध्यापक मंडल के सहयोग से सुदृढ़ व्यवस्था कायम होती है। युद्ध में सफलता मिलने पर यश सिर्फ सेनापति को नहीं मिलता, अपितु विजय का वास्तविक श्रेय सैनिकों की व्यक्तिगत वीरता, साहस और कर्तव्यपरायणता को मिलता है, उसी प्रकार किसी विद्यालय की प्रतिष्ठा का असली आधार अध्यापक मंडल है। प्रधानाध्यापक कितना ही अच्छा, योग्य संचालक तथा बुद्धिमान हो, परन्तु कुषल, अनुभवी, विद्धान तथा चरित्रवान अध्यापकों की सहायता के बिना उसका काम नहीं चल सकता।

विद्यालय प्रबन्ध में षिक्षकों का सहयोग अत्यंत आवष्यक है। इसके कई कारण है। सर्वप्रथम विद्यालय का कार्यक्रम अनेक क्षेत्रों में बँटा होता है। प्रधानाध्यापक को उन सभी क्षेत्रों की जानकारी हो सकती है, परन्तु उन सबका विषेष ज्ञान उसे हो, ऐसा आवष्यक नहीं होता। षिक्षक मंडल में विभन्न रूचियों और विषेष योग्यताओं वाले अध्यापक होते है – कोई साहित्यिक, कोई लेखक, कोई खिलाड़ी होते हैं। वे सब विद्यालय के प्रत्येक विभाग को भली प्रकार संरक्षण और पथ–प्रदर्षन प्रदान कर सकते है। प्रधानाध्यापक उन पर विष्वास करके काम सौंपते है। यदि सभी षिक्षक थोड़ा–थोड़ा समय भी निकाले, तो सारा प्रबन्ध सफलता से हो जाता है।

दूसरें षिक्षकों और विद्यार्थियों का सीधा सम्बन्ध होता है। विधार्थीगण प्रधानाध्यापक के निकट जाने में हिचकते हैं और भय खातें हैं। दूसरी ओर वे अध्यापकों से निःसंकोच होकर मिलते है। अध्यापक उनकी आवष्यकताओं और कठिनाइयों को अच्छी तरह समझते हैं। इसलिए विद्यार्थी समुदाय में असंतोष नहीं फैल पाता। अध्यापकों का व्यक्तिगत प्रभाव अनेक संकटों और समस्याओं को दूर रखने में सहायक होता है, विधार्थी के चरित्र–निर्माण की दृष्टि से अध्यापक विद्यार्थियों के मन पर अंकित हो जाता हैं। इतिहास से अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं, जिनके आधार पर अध्यापकों के व्यक्तिगत प्रभाव का महत्व सिद्ध हो जाता है। अध्यापक का प्रोत्साहन एक बड़ी षक्ति होती है।

विद्यालय का समस्त षिक्षण–कार्य अध्यापक पर हीं निर्भर है। षिक्षण का कार्य अध्यापकों के सक्रिय सहयोग के बिना चल ही नहीं सकता। षिक्षा–मनोविज्ञान के अनेक सिद्धान्तों और सूत्रों को सफलतापूर्वक व्यवहारिक रूप से काम में लाना अध्यापकों की जिम्मेदारी होती है। षिक्षा स्तर को उपर उठाने में उनका बहुत बड़ा हाथ होता है। आज हमारें देष में षिक्षा की दुर्व्यवस्था का मूल कारण अध्यापकों की दुर्दषा है यदि उन्हें षिक्षण के उत्तम साधन नहीं प्राप्त हैं, उनका मन निष्चित नहीं है, तो षिक्षा का कार्य कैसे चल सकता है।

विद्यालय प्रबन्ध में अध्यापक एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य यह करता है कि बालकों के अभिभावकों को विद्यालय में रूचि लेने के लिए प्रवृत करता है प्रायः अध्यापक मंडल के अधिकांश सदस्य विद्यालय के आस–पास रहते हैं। और उनके बालकों को इतनी अधिक सुविधाएं

प्राप्त हैं कि वे बालकों के घर प्रायः जाते रहते हैं। उनकी सहायता से परिवार तथा विद्यालय के कार्यो के बीच पाये जाने वाला विरोध दूर हो जाता है।

विद्यालय के भीतर स्वस्थ वातावरण पैदा करना और विद्यार्थियों के भीतर सच्ची अनुषासन की भावना भरना अध्यापकों का काम है। प्रधानाध्यापक पर काम का अधिक बोझ रहता है और उसको प्रायः विद्यालय के बाहर दौड़ना पड़ता है। ऐसी स्थिति में बालकों की गतिविधि पर वह ध्यान नहीं दे पाता। अध्यापकगण हर समय विद्यालय में वर्तमान रहते है। और उनकी दृष्टि में वह सभी विद्यार्थी चढ़े होते है, जो वातावरण को विषुद्व बनाते हैं। इन सब पर नियंत्रण पाने के लिए अध्यापकों का सहयोग अत्यन्त आवष्यक होता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. महात्मा गाँधी ने कहा था – "षिक्षक राष्ट्र निर्माता है"।
2. ;अग्रवाल, जे0 सी0ः विकासषील भारत में षिक्षा, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली, 1994.
3. सिंह, कृष्णाः उच्च षिक्षा की सामाजिक हिसाबदेयता–चुनौतियाँ एंव सृजनात्मक उपाय, अध्यापक षिक्षा असमंजस में, अध्ययन पब्लिषर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2007.
4. जयसवाल, सीतारामः षिक्षा मनोविज्ञान, प्रकाषन केन्द्र, लखनऊ, 1991
5. षर्मा, सरोज एंव गुप्ता, नंदिनी, षैक्षिक तकनीकी एंव कक्षा–कक्ष प्रबंध, ष्याम प्रकाषन, जयपुर, 2007.
6. डयूीव, जॉनः विद्यालय और सामाजिक विकास, सिकागो, सिकागो विष्वविद्यलय प्रेस ;1907द्धरू 19.44प